अन्नपूर्णास्तोत्र

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन,
बम्बई

।। श्रीः ।।

पूज्यपादभगवच्छंकराचार्यप्रणीतम्

अन्नपूर्णास्तोत्रम्

मुरादाबादस्थव्रजरत्नभट्टाचार्य्यद्वारा
भाषानुवादितम्



मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण : अगस्त २००५, सम्वत् २०६२

मूल्य : ८ रुपये मात्र।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

श्री:

दो शब्द

दोहा

संतसभा झांकी नहीं, कियो न हरि गुण गान ।
नारायण फिर कौन विधि, तू चाहत कल्यान ॥ १ ॥
तुलसी अपने रामको, रीझ भजो की खीज ।
भूमि पड़े विधु जामि हैं, उल्टा पड़ै कि सीध ॥ २ ॥

मनको सांसारिक पदार्थोंसे हटाकर उस जगज्जननी जगदीश्वरीकी ओर लगानेका सबसे अच्छा उपाय भक्ति है। जिस समय मनुष्य भक्ति भावसे प्रेमानन्दित हो किसी देवता अथवा देवीकी स्तुति करता है उस समय जो आनन्द, जो रस उस भक्तको आता है वह अवर्णनीय होता है । पूज्यपाद भगवान् श्रीशंकराचार्यजी प्रणीत "अन्नपूर्णास्तोत्र" स्तोत्रोंमेंसे एक अपूर्व स्तोत्र है कि जिसकी भाषाटीका मुरादाबाद निवासी पं० ब्रजरत्नजी भट्टाचार्यने बडीही सुन्दर तथा रोचक और चित्ताकर्षक की है ॥

इस अन्नपूर्णा स्तोत्रके श्रद्धापूर्वक निरन्तर प्रातःकाल पाठ करनेसे गिरिराज–कुमारी पार्वती प्रसन्न होकर धन–धान्य आदिसे अपने भक्तको परिपूर्ण करती हैं। जो मनुष्य सहजमें थोड़े परिश्रमसे ही अपने दुख दारिद्र्यका अन्त देखना चाहता है वह जगन्माता श्री अन्नपूर्णा देवीकी आराधनाको ही सर्वोपरि मान अपना महान् धर्म एवं कर्तव्य बना ले, ऐसा करनेसे मनुष्यका दुःखदायक जीवन सुखदायक हो जाता है और उसका जीवन एक सात्त्विक जीवन बन जाता है।

इस संस्करणको और भी भली भांति शोध सर्वांग सुन्दर बना आपके सन्मुख उपस्थित किया है।

कृपाकांक्षी–
जगदीशप्रसाद मिश्र,
मुरादाबाद.

बम्बई.
धनतेरस.
२७ अगस्त १९३२.

॥ श्रीः ॥

भाषाटीकासहितम्–

अन्नपूर्णास्तोत्रम्

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी
निर्धूताखिलघोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी।
प्रालेयाचलवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी १॥

हे मातः अन्नपूर्णे ! तुम सदा आनन्द करनेवाली हो, तुम्हारे हाथमें निरन्तर वर और अभय रहते हैं, तुम सुन्दरतारूप रत्नोंकी आकर (खान) हो, तुम अपने भक्तोंके समस्त पाप नाश करके उन्हें पवित्र कर देती हो, तुम्ही सबकी ईश्वरी प्रत्यक्ष माहेश्वरी हो, तुमनेही गिरिराज हिमालयके वंशको (पार्वती होके) पवित्र किया था, मइया ! तुम्ही काशीपुरीकी महारानी

हो और तुम्ही संपूर्ण संसारके तईं अन्नपूर्णा हो अतएव सबकी माता भी तुम्ही हो सो कृपा कर मुझे भी भिक्षा दो ॥ १ ॥

नानारत्नविचित्रभूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी
मुक्ताहारविलम्बमानविलसद्वक्षोजकुम्भान्तरी।
काश्मीरागुरुवासितारुचिकरी काशीपुराधीश्वरी भिक्षां देहि० ॥ २ ॥

हे भगवति अन्नपूर्णे! तुम्ही अनेक प्रकारके रत्नोंके द्वारा विचित्र आभूषण करता हो, तुम्हारा शरीर सुवर्णके आडंबरसे अलंकृत है. तुम्हारे उरोजरूप दो कुम्भोंके मध्यका भाग हृदयमें लम्बायमान मुक्ताहारसे सुशोभित है, तुमने अपने शरीरको कुंकुम और अगरादि सुगन्धितद्रव्योंसे कान्तिमान् करा है, तुम्ही काशीपुरीकी अधीश्वरी हो, कृपा करके मुझे भिक्षा दो ॥ २ ॥

योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मार्थनिष्ठाकरी
चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी

सर्वैश्वर्यसमस्तवाञ्छितकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि० ॥ ३ ॥

हे मातः ! योगी पुरुषोंके योगके द्वारा तुम्ही आनन्द देती हो, अपने भक्तजनोंके शत्रुओंका नाश करती हो, हे मइया! धर्म और धनके साधन करने में भी तुम्ही सहाय करती हो अतएव उन कार्योंमें दृढ निष्ठा (प्रीति) करती हो तुम्हारा तेज चन्द्रमा सूर्य और अग्निके समान प्रकाशित है, तुम अपनी पूर्णशक्तिसे त्रिलोकीकी रक्षा करती हो. अपने भक्तोंके समस्त मनोरथोंको पूर्ण करके उनके तईं संपूर्ण ऐश्वर्य प्रदान करती हो, हे काशीपुराधीश्वरी। तुम मुझे भी भिक्षा दो॥ ३ ॥

कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी उमा शंकरी
कौमारी निगमार्थगोचरकरी ओङ्कारबीजाक्षरी
मोक्षद्वारकपाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि० ॥ ४ ॥

हे देवि ! तुमने कैलास पर्वतकी कन्दाओंमें अपना

स्थान बनाया है, तुम्ही गौरी (अत्यन्त गौरवर्णवाली) उमा (महादेव की लक्ष्मीस्वरूपा अथवा शिवरूप पतिकी कामनासे तपश्चर्या करनेके हेतु निषेध करी हुई) और शंकरी (शंकरमहादेवकी पत्नी) हो तुम्ही कौमारी (स्वामीकार्त्तिकेयकी शक्तिस्वरूपा) और निगमों (वेदशास्त्रादिकों) के अर्थ करनेवाली हो, तुम्ही ओंकारस्वरूपबीजाक्षरवाली हो, हे भगवति ! मोक्षमार्गके कपाट खोलनेमें केवल एक तुम्ही समर्थ हो, हे काशीपुराधीश्वरी ! मुझे भिक्षा दो ॥ ४ ॥

दृश्यादृश्यप्रभूतवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी
लीलानाटकसूत्रभेदनकरी विज्ञानदीपांकुरी ।
श्रीविश्वेशमनःप्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि० ॥ ५ ॥

१—योगाग्निदग्धदेहा या पुनर्जाता हिमालये । शंखकुन्देन्दुधवला ततो गौरीति सा स्मृता ॥ २—उमेति मात्रा तपसो निषिद्धा पश्चादुमाख्यां सुमुखी जगाम ।

हे अन्नपूर्णे ! तुम संपूर्ण स्थूल सूक्ष्म जीवोंको भोजन दान कर उनको सब प्रकारकी शक्तियोंसे सुसम्पन्न करनेवाली हो; यह निखिल ब्रह्माण्ड तुम्हारे उदररूप भाण्ड (पात्र) में स्थित है, तुम्ही अपनी शक्ति द्वारा संपूर्ण चराचरको स्वकीय कार्योंमें प्रवृत्त करती हो और ज्ञानरूप दीपककी शिखा हो, एवं तुम्ही अपनी विशेष चातुरीसे श्रीमान् विश्वनाथ भगवान्के मनको सन्तुष्ट करती हो अतएव काशीपुरीकी तुम्ही अधीश्वरी हो मुझे भिक्षा प्रदान करो ॥ ५ ॥

उर्वीसर्वजनेश्वरी भगवती माताऽन्नपूर्णेश्वरी
वेणीनीलसमानकुम्भलहरी नित्यान्नदानेश्वरी।
सर्वानन्दकरी दशाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि० ॥ ६ ॥

हे ईश्वरी ! तुम्ही भूमिके ऊपर स्थित हुए संपूर्ण जनसमुदायकी ईश्वरी हो, तुम्ही ऐश्वर्यसंपन्न और अन्न धनसे भरपूर भरी हुई अन्नपूर्णा माता हो, तुम्हारे केश-

पाशके केश नीले वर्णसे शोभा पाते हैं और हे परमे-श्वरी ! तुम्ही सबको अन्नदान देती हो, तुम सदा आनन्द और शुभदशा करनेवाली हो, हे काशीपुराधी-श्वरी ! मुझे भी भिक्षा प्रदान करो ॥ ६ ॥

आदीशान्तसमस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी काश्मीरा त्रिजनेश्वरी त्रिलहरी नित्यांकुरा शर्वरी॥ कामाकांक्षकरी जनोदयकरी काशीपुरा-धीश्वरी भिक्षां देहि० ॥ ७ ॥

हे परमेश्वरी ! दीक्षित होकर संसारमें जो शिक्षा प्रदान करते हैं इन सबका तुमनेही उपदेश किया है, तुमनेही महादेवके तीन[1] भावोंका विधान किया है, स्वर्ग मर्त्य और पाताल इन तीनों लोकोंमें अपनी मायासे

१–भाव यह है कि तुमही महादेवजीने सत्त्व रज तम इन तीन भावोंका प्रादुर्भूत करके सत्त्वसे संसारका विधान, रजसे जगत्का पालन और तमसे संहार कराती हो । अथवा तीन भाव यह भी हैं–"पशुवीरा दिव्यभावा देवता मन्त्रसिद्धिदा:" मद्यंमत्स्यं

परमेश्वरी प्रतीत होती हो, तुमही इस लोकमें गंगा यमुना और सरस्वती होकर प्रवाहित हो रही हो जिस वस्तुका कभी नाश न हो ऐसी मोक्षरूपा वस्तुकी देनेवाली भी तुम्ही हो अभिलाषी पुरुषोंकी संपूर्ण कामनाओंकी पूर्ण करनेवाली तुम्ही हो, हे मातः! तुम अपने भक्तजनोंकी उन्नति करती हो, हे काशीपुराधीश्वरी हे अन्नपूर्णेश्वरी मा! मुझे भिक्षा दान करो ॥ ७ ॥

देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुन्दरी
वामस्वादुपयोधरप्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी ॥
भक्ताभीष्टकरी दशाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि० ॥ ८ ॥

–तथा मांसं मुद्रा मैथुनमेव च । श्मशानसाधनं भद्रे चितासाधनमेव च ।' इति दिव्यभावः । दिव्यभावः । दिव्यस्तु देववत्प्रायो वीरश्चोद्धतमानसः । पशुभावः कलौ नास्ति दिव्यभावोऽपि दुर्लभः । वीरसाधनकर्माणि प्रत्यक्षाणि कलौ युगे । अथवा सात्त्विकादिभेदाद्भावस्त्रिविधः सात्त्विकः शमदमादिरूपः राजसो हर्षदर्पादिरूपः शोकमोहादिरूपस्तु तामसः ।

हे महामाये ! तुम देवी[1] (भक्तोंका दुःख दूर कर उन्हें प्रसन्न करनेवाली) हो, तुम्हारा शरीर विचित्र रत्नोंके आभूषणोंसे अलंकृत है, तुम्ही सतीरूपसे दक्ष-प्रजापतिके घर उत्पन्न होके दाक्षायणी कहलाई हो तुम स्वाभाविक सुन्दरी हो, तुम सब जगत्की माता, इस कारण अपने स्तनोंका मधुर दुग्धपान कराके हितसाधन करती हो, तुम सबकी महा ईश्वरी हो अत-एव सबका सौभाग्य करती हो, केवल एक तुमही अपने भक्तोंके मनोरथोंको पूर्ण करती हो और संक-टोंको टालकर शुभद दशाकी प्रवृत्ति करती हो, अत-एव मुझेभी भिक्षा दान करो ॥ ८ ॥

चन्द्रार्कानलकोटिकोटिसदृशाचन्द्रांशुबिम्बाधरी
चन्द्रार्काग्निसमानकुण्डलधरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी ।
मालापुस्तकपाशकांकुशधरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि० ॥ ९ ॥

---

१ यदि देवीशब्दके विशेष अर्थ जाननेकी कामना हो तो एक बार हमारी अनुवादित लघुसिद्धान्तकौमुदी देखो ।

हे भगवति ! तुम करोड़ों चन्द्रमा असंख्य सूर्य और अनगिनत अग्निकी समान हो, तुम्हारे आननकी अपार छबि मानो चन्द्रमाकी किरणोंको धारण करती है, तुमने सूर्य, चन्द्रमा और अग्निके तुल्य देदीप्यमान कुण्डल धारण किये हैं, चन्द्रमा और सूर्यके समान तुम्हारा उज्ज्वल वर्ण है, हे मातः ! तुमने अपने एक एक हाथमें क्रमसे माला, पुस्तक, पाश और अंकुशको धारण किये हैं, अतएव तुम्हीं मुझे भिक्षा दान दो॥९॥

क्षत्रत्राणकरी महाभयकरी माता कृपासागरी
साक्षान्मोक्षकरी सदाशिवकरी विश्वेश्वरश्रीधरी।
दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि० ॥ १० ॥

हे मातः ! तुम्हीं अपने क्षत्रका आश्रय देकर सबकी रक्षा करती हो, सबको अभयदान देती हो, इसीसे तुम सबकी माता हो, तुम्हीं कृपाकी सागररूपा हो, अतएव साक्षात् मोक्षपदकी देनेवाली भी हो, तुम

सदा सबका मंगल विधान करती हो, निखिल विश्वका पालन पोषण करनेवाले श्रीमहादेवजीकी श्रीवृद्धि करनेवाली भी तुम्हीं हो, दक्षप्रजापतिके यज्ञमें विघ्न करके उसे रोदन करानेवाली तुम्हीं हो, हे मातः! तुम्हीं सबको आरोग्य दान करती हो, हे श्रीमति! तुम्हीं मुझे भिक्षा प्रदान करो ॥ १० ॥

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकरप्राणवल्लभे ।
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ॥ ११ ॥

हे अन्नपूर्णे! तुम समस्त सौभाग्योंसे सदा भरपूर हो, हे श्रीमति! तुम्हीं कल्याणकर्ता महादेवजीकी प्राणोंके समान प्यारी हो, अतएव हे पार्वति! ज्ञान और वैराग्यकी सिद्धिके अर्थ मुझे भी भिक्षा प्रदान करो ॥ ११ ॥

माता मे पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः ।
बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥ १२ ॥

मैं केवल यही भिक्षा चाहता हूँ कि, गिरिराजकुमारी पार्वती मेरी माता, महाप्रभु श्रीशिवजी महाराज मेरे पिता और महादेवजीके अनन्य भक्त मेरे बन्धु बांधव हैं, एवं तीनों लोक मेरे स्वदेश हैं, ऐसा ज्ञान सदा मेरे हृदयमें दृढभावसे स्थित रहे ॥ १२ ॥

इति श्रीमुरादाबाददेशनिवासि-विद्याचुंचु श्रीमज्ज्वाला-नाथशास्त्रितनूत्पन्न पं० ब्रजरत्नभट्टाचार्यकृतभाषा-व्याख्यासहित श्रीअन्नपूर्णास्तोत्र समाप्त ॥

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४१०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

